रिकॉर्डः–ओम नमो शिवाय... ओमशांति प्रातःक्लास 26/1/67
बच्चों को समझाया गया है जब शांति में बैठते हैं जिसको नेष्टा कहा गया है, वो ड्रिल करवाई जाती है। अब बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, जो जीते जी मरे हैं। कहते हैं हम जीते जी मर चुके हैं। जैसे मनुष्य मरते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं। सिर्फ संस्कार रहते हैं। अब तुम भी बाप का बन कर दुनियां से मर गये हो। बाप कहते हैं तुम्हारे में भक्तिमार्ग के संस्कार थे। अभी वो संस्कार बदल रहे हैं। तो जीते जी तुम मरते हो ना। मरने से मनुष्य सब कुछ भूल जाते हैं। फिर नये सिर पढ़ना होता है। बाप भी कहते हैं तुम भी जो कुछ पढ़े हुये हो वो भूल जाओ। तुम तो बाप के बन गये हो तो भक्तिमार्ग की बातें जो पढ़ी–सुनी हैं वो भूल जाओ। उनको याद भी ना करो। मैं तुमको नई बात सुनाता हूँ। भक्तिमार्ग में क्या–2 है वो भी सुनाता हूँ। तो अब वेद, शास्त्र, ग्रंथ, जप, तप यह सारी बातें भूल जाओ। इसलिए कहा जाता है हियर नो ईविल, सी नो ईविल। यह तुम बच्चों के लिए है। कई बहुत शास्त्र आदि पढ़े हुये हैं। तो पूरा मरे ना हैं तो फालतू आरग्यू करेंगे। कहेंगे बाप ने जो सुनाया है वो ही सच है। बाकी झूठे शास्त्र हम मुख में क्यों लावें? बाप कहते हैं वो मुख में लाओ ही नहीं। हियर नो ईविल... बाप ने डायरैक्शन दिया है कुछ भी सुनो नहीं। बोलो, भक्तिमार्ग से हम मर चुके हैं। अब ज्ञान सागर के हम बच्चे हैं तो भक्ति को हम याद क्यों करें? हम एक भगवान को ही याद करते हैं। बाप ने कहा है भक्तिमार्ग को भूल जाओ। मैं तुमको सहज बात बताता हूँ कि मुझे याद करो बीज को तो सारे झाड़ का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में आ जावेगा। यह ज्ञान बुद्धि में भरपूर रहेगा। तो फिर भक्ति की बांस बिल्कुल ही निकल जानी चाहिए। आरग्यू नहीं करनी चाहिए। फलाने श्लोक में यह है वो कहेंगे फलाने श्लोक में यह है। तुम्हारी मुख्य है गीता। वेद आदि कोई धर्म–शास्त्र नहीं है। गीता में भी भगवान की समझानी है। वो है रचता और रचना के आदि, मध्य, अंत की समझानी। वो लोग तो कह देते नेति–2। हम नहीं जानते हैं। गोया ऑर्फन्स हैं। साधु–संत आदि सब आर्फन्स हैं ना। धणी–धोणी कोई है नहीं जो समझावे कि यह भूख हड़ताल आदि क्यों करते रहते हो। कितने नास्तिक बन गये हैं। अब तुम आस्तिक बन रहे हो। यह है नई बात। नई बात पर हमेशा ज्यादा ध्यान दिया जाता है। है भी बड़ी सिम्पल बात। सबसे बड़ी बात है याद करने की। घड़ी–2 कहना पड़ता है मनमनाभव। यह बहुत गुह्य बात है। इसमें ही विघ्न पड़ता है। बहुत बच्चे हैं जो दिन भर में दो मिनट भी याद नहीं करते हैं। बाप का बन कर भी काम अच्छा नहीं करते हैं तो फिर याद भी नहीं कर सकते हैं। विकर्म करते रहते हैं तो बुद्धि में बैठता ही नहीं। तो कहेंगे ना कि यह बाप की आज्ञा की निरादर है। चढ़ नहीं सकेंगे। वो ताकत नहीं मिलती। जिस्मानी पढ़ाई से भी बल मिलता है। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इनकम। शरीर निर्वाह होता है। बाकी वेद–शास्त्र आदि पढ़ने से तो और ही गिरना होता है। पढ़ाई से फिर भी फायदा होता है सो भी अल्पकाल के लिए। कई पढ़ते–2 मर जाते हैं। वो पढ़ाई थोड़े ही साथ ले जावेगी। दूसरा जन्म लिया फिर नये सिर पढ़ना पड़ता है। यहाँ तो तुम जितना पढ़ेंगे वो साथ ले जावेंगे। तुम्हारी यह कमाई साथ चलनी है। बाकी तो वो सब है ही भक्तिमार्ग। ज्ञान क्या चीज है यह कोई भी नहीं जानते। रूहानी बाप तुम रूहों को बैठ ज्ञान देते हैं। एक ही बार बाप सुप्रीम रूह आकर रूहों को नालेज देते हैं, जिससे ही तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। भक्तिमार्ग में स्वर्ग थोड़े ही होता है। भक्तिमार्ग है ही नर्क। छोटा बच्चा भी झट कह देंगे जी ईश्वर तो सर्वव्यापी है। तो निधणका हुआ ना। अभी तुम धणी के बने हो। फिर भी माया ऐसी है जो तुम बच्चों को भी आपस में लड़वा देती है। जो आपस में लड़ते हैं तो बाबा समझते हैं यह निधणके हैं। बाप की याद में नहीं रहते हैं। निधणके बन और कुछ ना कुछ पाप कर्म कर देते हैं। बाप कहते हैं मेरा बन कर फिर मेरा नाम मत बदनाम करो। एक/दो से बड़े प्यार से चलो। उल्टा–सुल्टा बोलो मत। बाप को ऐसे–2 अहिल्याओं, कुब्जाओं, गणिकाओं का भी उद्धार करना पड़ता है। कहते हैं भिलनी के बेर खाये। अब ऐसे भीलों के थोड़े ही खा सकते हैं। भिलनी से जब ब्राहमण बन जाती है तो कैसे नहीं खा (अधूरी मुरली)